राजेन्द्र राज

सदी की कैसी निर्मम लानतें हैं
लहू में हाथ धोना आदतें हैं

दरिंदे कायराना हरकतों में
सरों को काटते हैं, उछालते हैं

कई दिन से हैं भूखे और प्यासे
हमें रोटी दो अब ये पुकारते हैं

भरोसा आदमी पर करने वाले
दवा हर दर्द की पहचानते हैं

दरिंदे मौत के ताजिर, हमारे
दिमागो- दिल में नफ़रत पालते हैं

तबाही मौत की चारों तरफ से
वहां दो बूंद को बिलबिलाते हैं

सफ़र में दूर तक चलती हैं यादें
क़दम थकते हैं खुद को संभालते हैं

मुहब्बत के फ़साने याद उनको
खड़े हैं दूर से ही निहारते हैं

किसानों की कमाई होगी कैसे
फ़सल को ग़ैर जाकर काटते हैं

नहीं छत पर है दाना पानी वैसे
परिंदों को कहां हम पालते हैं

सुदेश कुमार मेहर

बहुत ख़ुद्दार है घुटनों के बल चल कर नहीं आता
वो लिखता है बहुत अच्छा मगर छप कर नहीं आता

मोहब्बत ख़ल्वत-ए-दिल में उतर जाती है चुपके से
ये ऐसा है मरज़ यारो कभी कह कर नहीं आता

रज़ा उस की बहाती है तो पत्तों को किनारा है
मगर ख़ुद तैरता है आदमी बह कर नहीं आता

जो उस के दिल में आता है वही कहता है महफ़िल में
कभी लिख कर नहीं लाता कभी पढ़ कर नहीं आता

बड़े लोगों से मिलता है बहुत मशहूर दुनिया में
वो ऐसा शख़्स कि इल्ज़ाम भी उस पर नहीं आता

फ़क़त क़ाबिल हुआ तो क्या बहुत काफ़ी नहीं इतना
सिफ़ारिश के लिए वो क्यूँ उसे मिल कर नहीं आता

ISSN:2583-8849